UGC NET JRF... Paper =2 Sanskrit

UNIT=2

Class-13

6 pm

Filler Form

YouTube

By=NIDHU CHAUDHARY

B.A., M.A., P.G.D.C.A. , now Ph.d running

UGC Paper 1st Free Cl...
only admins can send messages

+91 81453 66384 joined using this group's invite link

+91 70102 37343 joined using this group's invite link

+91 96672 47765 joined using this group's invite link

+91 98557 99207 joined using this group's invite link

+91 60035 13791 joined using this group's invite link

+91 83590 38670 joined using this group's invite link

+91 91497 27505 joined using this group's invite link

+91 70910 66218 joined using this group's invite link

+91 75779 16791 joined using this group's invite link

+91 60035 13791 left

+91 90012 26665 joined using this group's invite link

+91 80037 25657 joined using this group's invite link

+91 89555 46730 joined using this group's invite link

Type a message

UGC Paper 1st Free Cl...
120 subscribers

December 28

Channel created

Channel photo changed

Broadcast

government_job_2020

1,711 Posts

6,845 Followers

7 Followi

Govt job 2020 (Fillerform) 17K

Education Website

Free Online Computer Class

1. Baisc computer

2. Web development

3. Hackig ... more

youtu.be/mIfPC5C-EvQ

Jaipur, Rajasthan

Edit Profile

Promotions | Insights | Contact

New

15K Sub

YouTube

2000 users

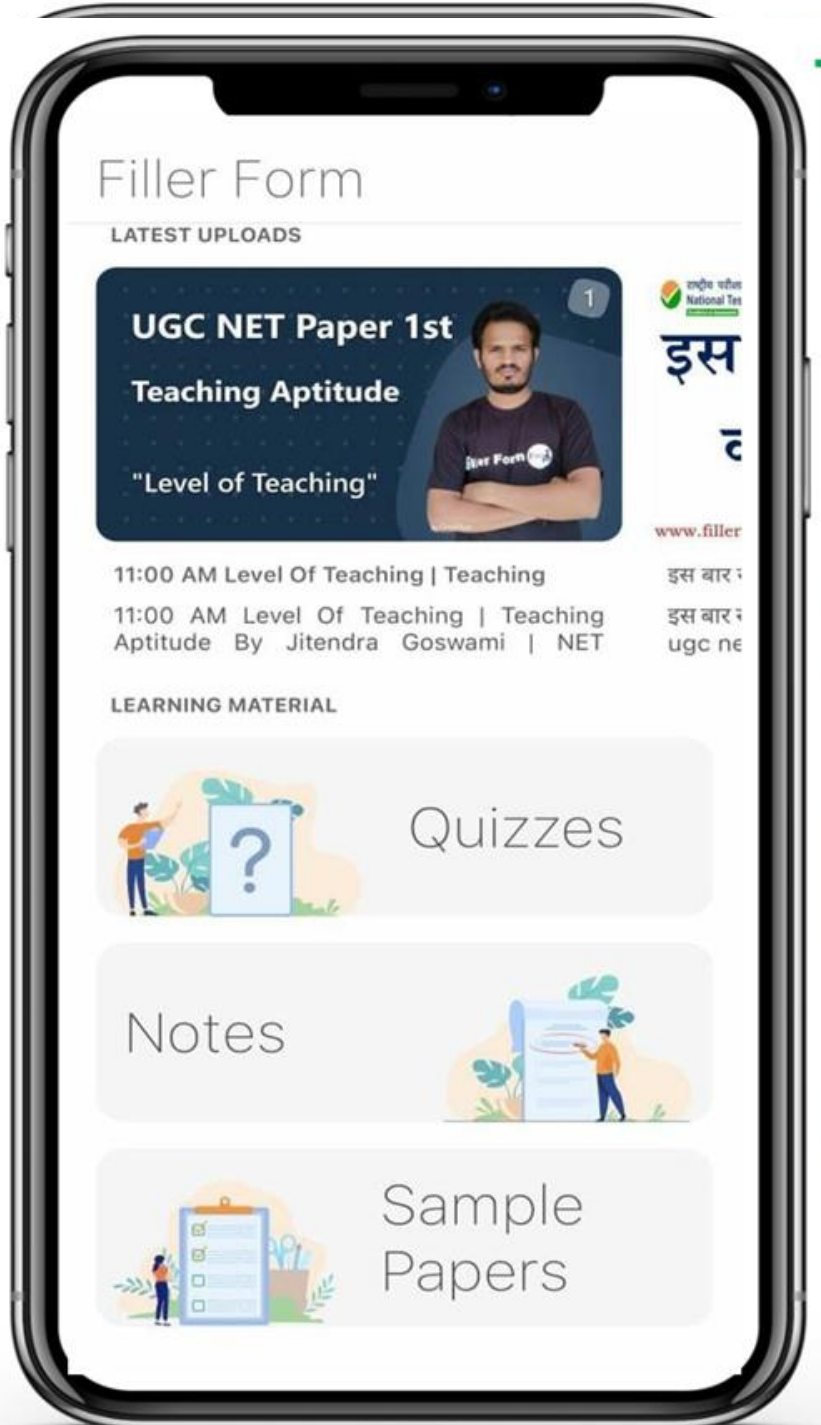

UGC NET 100% Off Free Class

Free Notes

Live Class

5000+MCQ+PYQ

Free Books

100% OFF

fillerform

8209837844
www.ugc-net.com

Unit_2 वैदिक साहित्य का विशिष्ट अध्ययन

- = ऋग्वेद : एक परिचय
- = ऋग्वेद - संहिता सूक्त
- = शुक्लयजुवेद -संहिता सूक्त
- = कृष्ण यजुर्वेद - एक परिचय
- = अथवॅवेद -संहिता सूक्त
- = बाह्मण- साहित्य विधि एवं उनके प्रकार
- = उपनिषद् - साहित्य वैदिक व्याकरण,
  = निरूक्त एवं वैदिक व्याख्या- पद्धति

8209837844

www.ugc-net.com

उपनिषद् - साहित्य वैदिक व्याकरण

उपनिषद्–साहित्य

वैदिक साहित्य के तीन विभाग हैं—कर्म, उपासना और ज्ञान। उपनिषद् ज्ञानकांड हैं। इसमें परब्रह्म की प्राप्ति और आत्मा के यथार्थ स्वरूप का बोध कराया जाता है।

वैदिक साहित्य का अंतिम भाग होने के कारण 'उपनिषद्' वेदांत से भी आख्यायित है। 'ब्रह्मसूत्र' में महर्षि व्यास (वादरायण) ने इसके सिद्धान्तों को व्यवस्थित रूप से दिखाया है। 'श्रीमद्भगवद्गीता' उपनिषदों का सारतत्त्व है। अत: 'उपनिषद्' 'ब्रह्मसूत्र' और 'श्रीमद्भगवद्गीता' लोगों के मध्य प्रस्थानत्रयी के नाम से प्रसिद्ध है।

'उपनिषद्' पद 'उप' और 'नि' उपसर्गपूर्वक 'सद्' धातु के साथ क्विप् प्रत्यय जोड़ने से बना है। 'सद्' धातु का प्रयोग अग्रलिखित अनेक अर्थों में होता है—विशरण (नाश होना), गति (प्राप्त होना) तथा अवसादन (शिथिल करना)। आचार्यश्रेष्ठ शंकर ने 'उपनिषद्' का अर्थ निरुपण करते हुए लिखा है—

उप शब्दो हि सामीप्यमाह निशब्दश्च निश्चयार्थः।
तस्मादैकात्म्यं निश्चितम् सा विद्या सहेतुं संसारं
सादयतीत्युपनिषदुच्यते।

8209837844 www.ugc-net.com

इस प्रकार 'उपनिषद्' अविद्या का नाश, ब्रह्मविद्या की प्राप्ति तथा सांसारिक दु:खों का अवसादन करनेवाला ग्रंथ है। उपनिषदों की रचना किसी एक कालखंड में नहीं हुई है, किंतु 'वेदांत' शब्द से इतना स्पष्ट है कि इनकी रचना वेदों के बाद हुई है। 'मुक्तिकोपनिषद्' की रचना-काल तो 'वाल्मीकि रामायण' के बाद का माना जाता है।

उपनिषद्-ग्रंथों की वास्तविक संख्या के सम्बन्ध में 'मुक्तिकोपनिषद्' (30-40) में वर्णित तथ्य को प्रमाण के रूप में स्वीकार किया जा सकता है। इसमें 108 उपनिषदों के नामोल्लेख हुए हैं, जो इस प्रकार हैं-

8209837844 www.ugc-net.com

इनमें 'ऋग्वेद' के 10, 'कृष्णयजुर्वेद' के 32, 'शुक्लयजुर्वेद' के 19, 'सामवेद' के 16, 'अथर्ववेद' के 31 हैं।

'ऋग्वेद' के उपनिषद् हैं–ऐतरेयोपनिषद्, कौषीतकि- ब्राह्मणोपनिषद्, नादबिन्दूपनिषद्, अक्षमालोपनिषद्, मुद्गलोपनिषद्, त्रिपुरोपनिषद्, बह्वृचोपनिषद्, सौभाग्यलक्ष्म्युपनिषद्, निर्वाणोपनिषद् और आत्मबोधोपनिषद्।

8209837844 www.ugc-net.com

'कृष्णयजुर्वेद' के 32 उपनिषद् हैं—कठोपनिषद्, तैत्तिरीयोपनिषद्, ब्रह्मोपनिषद्, कैवल्योपनिषद्, श्वेताश्वतरोपनिषद्, गर्भोपनिषद्, नारायणोपनिषद्, अमृतबिन्दुयोपनिषद्, अमृतनादोपनिषद्, कालाग्निरुद्रोपनिषद्, क्षुरिकोपनिषद्, सर्वसारोपनिषद्, शुकररहस्योपनिषद्, तेजोबिन्दूपनिषद्, ध्यानबिन्ददूपनिषद्, ब्रह्मविद्योपनिषद्, योगतमोपनिषद्, दक्षिणामूर्त्युपनिषद्, स्कन्दोपनिषद्, शारीरकोपनिषद्, योगशिखोपनिषद्, एकक्षरोपनिषद्, अदामालोपनिषद्, भवधूतोपनिषद्, रुद्रहृदयोपनिषद्, योगकुण्डल्युपनिषद्, वराहोपनिषद्, पञ्चब्रह्मोपनिषद्, प्राणाग्निहोत्रोपनिषद्, कलिसंतरणोपनिषद्, सरस्वतीरहस्योपनिषद्, कठरुद्रोपनिषद्।

8209837844 www.ugc-net.com

'शुक्लयजुर्वेद' के 19 उपनिषद् हैं–ईशावास्योपनिषद्, बृहदारण्यकोपनिषद्, जाबाल्युपनिषद्, हंसोपनिषद्, परमहंसोपनिषद्, सुबालोपनिषद्, मन्त्रिकोपनिषद्, निरालम्बोपनिषद्, त्रिशिखि-ब्राह्मणोपनिषद्, मण्डलब्राह्मणोपनिषद्, अद्वयतारकोपनिषद्, पैङ्गलोपनिषद्, भिक्षुकोपनिषद्, तुरीयातीतोपनिषद्, आध्यात्मोपनिषद्, तारसारोपनिषद्, याज्ञवल्क्योपनिषद्, शाट्यायनियोपनिषद्, मुक्तिकोपनिषद्।

8209837844 www.ugc-net.com

'सामवेद' के 16 उपनिषद् हैं–केनोपनिषद्, छान्दोग्योपनिषद्, मैत्रेय्युपनिषद्, मैत्रायण्युपनिषद्, वज्रसूचिकोपनिषद्, योगचूडामणि, वासुदेवोपनिषद्, आरुणिकोपनिषद्, सावित्र्युपनिषद्, रुद्राक्षजाबालोपनिषद्, जाबालदर्शनोपनिषद्, जाबाल्युपनिषद्, अव्यक्तोपनिषद्, संन्यासोपनिषद्, कुण्डिकोपनिषद्, महोपनिषद्।

8209837844 www.ugc-net.com

'अथर्ववेद के 32 उपनिषद् हैं–1. प्रश्नोपनिषद्, 2. मुंडकोपनिषद्, 3. मांडूक्योपनिषद्, 4. अथर्वशिरस् उपनिषद्, 5. अथर्वशिखोपनिषद्, 6. बृहज्जाबालोपनिषद्, 7. नृसिंह तापित्युपनिषद्, 8. नारद–परिव्राजक, 9. सीतोपनिषद्, 10. शरभोपनिषद्, 11. महानारायणोपनिषद्, 12. रामरहस्योपनिषद्, 13. रामतापिन्युपनिषद्, 14. शांडिल्योपनिषद्, 15. परमहंसपरिव्राजकोपनिषद्, 16. अन्नपूर्णोपनिषद्, 17. सूर्योपनिषद्, 18. आत्मोपनिषद्, 19. पाशुपत–ब्रह्मोपनिषद्, 20. परब्रह्मोपनिषद्, 21. त्रिपुरतापिन्युपनिषद्, 22. देव्युपनिषद्, 23. भावनोपनिषद, 24. ब्राह्मोपनिषद्, 25. जाबाल्युपनिषद्, 26. गणपत्युपनिषद्, 27. महावाक्योपनिषद, 28. गोपाल तापिन्युपनिषद्, 29. कृष्णोपनिषद्, 30. हयग्रीवोपनिषद्, 31. दत्तात्रेयोपनिषद् तथा 32. गरुडोपनिषद्।

8209837844 www.ugc-net.com

आदि शंकराचार्य ने जिन 12 उपनिषदों पर प्रामाणिक भाष्य लिखे हैं, उनके नाम इस प्रकार हैं–1. ईश, 2. केन, 3. कठ, 4. प्रश्न, 5. मुण्डक, 6. माण्डूक्य, 7. तैत्तिरीय, 8. ऐतरेय, 9. छान्दोग्य, 10. बृहदारण्यक, 11. कौषीतकी और 12. श्वेताश्वतर।

इनमें लोकप्रसिद्ध 10 उपनिषद् हैं–

ईश-केन-कठ-प्रश्न-मुण्ड-माण्डूक्य-तित्तिरः।
ऐतरेयं च छान्दोग्यं बृहदारण्यकं दश॥

8209837844 www.ugc-net.com

ईशोपनिषद् (यजुर्वेद–अध्याय–40)

'यजुर्वेद' का चालीसवाँ अध्याय ज्ञानपरक है। इसे 'ईशावास्योपनिषद्' के रूप में मान्यता प्राप्त है। इसकी विशेषता के सम्बन्ध में आचार्य महीधर ने भी लिखा है कि यज्ञकर्म से शुद्ध हुए अंत:करण को आत्मज्ञान–परमात्म–ज्ञान से संस्कारित करने के उद्देश्य से ऋषियों ने यह अंतिम अध्याय उत्कृष्ट ज्ञान–सूत्रों के रूप में स्थापित किया है।

ऋषि, देवता और छन्द–विवरण

ऋषि–दध्यङ् आथर्वण 1–14। दध्यङ् आथर्वण, ब्रह्मा 15,17। अगस्त्य 16।

देवता–आत्मा 1–14, 17। आत्मा, परमात्मा 15। अग्नि 16।

छन्द–अनुष्टुप् 1, 3, 5, 9–11, 13, 17। भुरिक् अनुष्टुप् 2। निचृत् त्रिष्टुप् 4, 16। निचृत् अनुष्टुप् 6–7, स्वराट् जगती 8, स्वराट् उष्णिक्

8209837844 www.ugc-net.com

शांति-पाठ

ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते॥

वह (परब्रह्म) पूर्ण है और यह (कार्य-ब्रह्म) भी पूर्ण है, क्योंकि पूर्ण से पूर्ण की ही उपत्ति होती है। तथा (प्रलय- काल में) पूर्ण (कार्य-ब्रह्म) का पूर्णत्व लेकर (प्रलय-काल में) अपने में लीन करके (पूर्ण-ब्रह्म) ही बचा रहा है।

8209837844

www.ugc-net.com

FEEDBACK

💥 आपको ये क्लास कैसा लगा ??

📝 Comment box में अपना comment कर के Next Class में आपका solution पाए 📑 📝

For More Information

www.ugc-net.com

/Fillerform /Fillerform /Fillerform

info@fillerform.com

8209837844

THANK YOU